Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
VOL- VIII ISSUE- II FEBRUARY 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

johUn dkfy;k d miU;kl e of.kr lekt ¼e/;ox½

l/kkdj flg
शोध छात्र
हिन्दी विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

dkलिया के उपन्यासों में मध्यवर्गीय समाज का चित्रांकन बड़े ही मार्मिक ढंग से किया गया है। जिसमें जीवन एक कला है। मध्यवर्ग का व्यक्ति जो एक तरफ निम्नवर्गीय समाज से और उसकी संस्कृति से अपने को दूर रखना चाहता है तो दूसरी तरफ उच्चवर्गीय शान–शौकत की तरह जीने को आतुर है। जिसके रहन–सहन में पाश्चात्य सभ्यता की सेज पर सोने का प्रयत्न सतत दिखाती है। उसे बड़ी उम्मीद है कि उच्चवर्गीय पाश्चात्य सभ्यता में बड़ी ही सुकून की नींद है पर वह अपनी संस्कृति को छोड़ना भी नहीं चाहता। वह दोनों में समन्वय करने का अथक प्रयास करता है लेकिन असफलता के तूफानों के बीच वह अपने को असहाय महसूस करने लगता है और उसे अपने भाग्य का खेल समझकर ईश्वर पर सब कुछ छोड़ देता है। जिसका यथार्थ चित्रण रवीन्द्र कालिया जी के उपन्यासों में देखा जा सकता है। मध्यवर्गीय समाज के तनाव, कुण्ठा एवं संघर्ष चाहे सामाजिकता का हो या राजनीति का या फिर पाश्चात्य सभ्यता के प्रति अन्धविश्वास का, कालिया जी का उपन्यास उन सब का दर्पण है। जहाँ से पाठक होकर अपनी आँखों द्वारा मध्यवर्गीय समाज को देख सकता है। उपन्यासकार ने इस बात पर विशेष बल दिया है कि मध्यवर्गीय समाज और उसका द्वन्द्व अपनी आडम्बरी चोले के साथ पाठक के सामने प्रस्तुत हो सके।

मध्यवर्गीय परिवार जिसकी श्रद्धा बाबा, तांत्रिक, गंडे–ताबीज और तंत्र–मंत्र में होती है, जिसके लिए वह जिसके लिए वह बाबाओं के पास चले जाते हैं और उनके द्वारा बताए गये आडम्बर का पूर्ण रूप से पालन करते हैं। इसका अंकन हम रवीन्द्र कालिया जी के उपन्यासों में देख सकते हैं। एक मध्यवर्गीय परिवार जो सुख–समृद्धि एवं ऐशो–आराम की खातिर अपने देश से दूसरे देश (कनाडा) पलायन कर जाते हैं। जहाँ उन्हें सुख–समृद्धि तो जरूर मिल जाती है मगर पाश्चात् सभ्यता का प्रभाव कपड़े की तरह उनके बच्चों पर सुशोभित होने लगता है। इससे उनका मानसिक तनाव बढ़ने लगता है। वह कनाड़ा से अपने देश लौटना भी नहीं चाहते और इस सभ्यता का प्रभाव अपने बच्चों पर पड़ने भी नहीं देना चाहते। वे अपने इस तनाव से बचने के लिए अपने देश से आये हुए गुरु जो की शरण में जाते है। बाबा द्वारा बताए गए उपचार को करने के लिए वे पूरा प्रयत्न करते हैं। जिसका उदाहरण हम ए. बी. सी. डी. उपन्यास की कुछ पंक्तियों में इस प्रकार देख सकते हैं–

''कुछ धार्मिक उपचार हैं।''
'शिवजी की आराधना तथा प्रदोष व्रत और शीनी को नीलम धारण करायें''
''यह सब कुछ नहीं ''उसने। हरदयाल ने पूछा, ''कोई ऐसा उपाय नहीं बताया जो हम कर सकें।''
''जब तक मंगल का प्रत्यंतर है आप मंगल के मंगल काली गाय को गुड़ की रोटी खिलायें। काले कौवों को काले तिल का चुग्गा लिखायें पीपल को जल चढ़ाने से भी शनि देवता शांत होते है।''[1]

उपर्युक्त पंक्तियाँ मध्यवर्गीय परिवार का पंडित (बाबा) द्वारा बताए गये आडम्बर क्रियाओं में अटूट विश्वास को दर्शाती है। हरदयाल और उसके पत्नी को पूर्ण विश्वास है कि काली गाय को गुड़ रोटी और काले कौवे को तिल का फूग्गा खिलाने से सामने आई हुइ सारी समस्या का समाधान दूर हो जायेगा। जिसको पूर्ण करने के

लिए अथक प्रयास करते है। लेकिन देश में काली गाय, काला कौवा और पीपल का पेड़ मिलना किसी के लाटरी लगने के समान है। पीपल का पेड़ पाना हरदयाल के लिए बड़ी ही समस्या है वह अपनी मातृभाषा पंजाबी में कहते है कि ''ऐ ऐत्थे कित्थे मिलेगा। पीपल दा पेड़, अलबता काली गाय जरूर मिल सकती है।''[2]

एक अपनी समस्या और दूसरी बाबा जी द्वारा बताए गये उपचार सम्बन्धित समस्या में पूरा परिवार उलझा हुआ है। समस्या खत्म नहीं हुई बल्कि एक समस्या को भूलकर दूसरी समस्या में हरदयाल और उसका पूरा परिवार उलझ जाता है। वह उपचार जिसे हम अन्ध विश्वास भी कह सकते है। यह मध्यवर्गीय परिवार की सबसे बड़ी समस्या है जिसका एक और नमूना रवीन्द्र कालिया जी के उपन्यास 17 रानड़े रोड में देखा जा सकता है। समुद्र के किनारे एक बँगला जो बहुत ही खूबसूरत है लेकिन लोगों की मान्यता यह कि उसमें भूत निवास करता है। जो भी इस बंगला में निवास करता है। या तो उसकी मौत हो जाती है। या फिर वह पागल हो जाता हैं। यदि यह सब नहीं हुआ तो वह किसी न किसी समस्या में उलझकर आत्म–हत्या जरूर कर लेता है। जिससे कोई भी उस बंगले को लेने को तैयार नहीं है। सम्पूरन एक मध्यवर्गीय लड़का है। जिसे भूत प्रेत या ग्रहों के फेर बदल में कोई विश्वास नहीं है और दृढ़ निश्चय के साथ उस कमरे (बंगले) को लेना चाहता है और ले भी लेता है। मगर जैसे ही उसके पास उस बंगले की चाभी आती है। वैसे ही उसके पास कुछ समस्याएँ भी आती है। जिससे वह विचलित तो जरूर होता है मगर वह अपने दृढ़ विश्वास को नहीं तोड़ता है। उसका दोस्त स्वर्ण उसे बार–बार प्रेरित करता है कि यार चाभी वापस वहीं रख जाओ जहाँ से लाए हो। इस चाभी का ऐसा असर हुआ है कि सुबह से अन्न का एक दाना नसीब नहीं हुआ बल्कि एक और समस्या घटित हो गई हम लोग जेल जाते–जाते बचे है। इस चाभी को वापस वहीं रख आओ स्वर्ण काफी हता" ा है। जो निम्न पंक्तियों द्वारा देखा जा सकता है।

"तुम भूत–प्रेत में वि" वास करते हो?" गाड़ी में बैठते ही सम्पूरन ने स्वर्ण से पूछा।

"आज से करने लगा हूँ। पत्रकार न आता तो हम लोग हवालात में होते"।.....

"मेरी मानों अभी जाकर वहीं चाभी रख दो जहाँ से उठाई है। ताकि आराम से सो सकें"।

स्वर्ण बोला।–3

स्वर्ण की यह पंक्तियाँ मध्यवर्गीय परिवार के भ्रम में पड़ने वाली कमजोर मनोवृति का परिचायक है। लेकिन वही सम्पूरन इन सब बातों पर ध्यान नहीं देता–उसे भूत–प्रेत पर वि" वास बिल्कूल ही नहीं हैं। जब स्वर्ण कहता है। कि चाभी वापस वही रख आओ और दुरैस्वामी के साथ चाभी उठाना। स्वर्ण को यह वि" वास है कि दुरैस्वामी तन्त्र विद्या जानता है। उसके साथ रहने पर भूत–प्रेत की समस्या न होगी–इस लिए वह सम्पूरन को बार–बार डराता है। लेकिन सम्पूरन अपने आत्मवि" वास से विचलित नही होता उसका उदाहरण भी निम्न पंक्तियों से देखा जा सकता हैं।

"सम्पूरन बहुत बे" ार्मी से हँसा। स्वर्ण को उसकी हँसी बहुत डरावनी लगी। उसने सुझाव दिया कि अभी दादर स्टे" ान पर उतर जातें हैं। फ्लैट की सीढ़ियों पर चाभी रख आतें हैं। सुबह दुरैस्वामी के साथ चाभी उठाना।"

" तुम भी निकले बुजदिल " सम्पूरन बोला, मुम्बई में फ्लैट मिलना कोई छोटी बात नहीं।

" मेरी मानो तुम इस पचड़े में मत पड़ो– स्वर्ण बोला "

" अब तो आर–पार कि लड़ाई लड़ूँगा। " सम्पूरन कुछ इस अन्दाज में बोला।– आदमी की जब मौत आती है तो कुछ इसी तर्ज पर सोचता है। इतने खून–खराबे से भी तुम कोई सबक नहीं लेना चाहते।''[4]

मध्यवर्गीय परिवार में आडम्बर भ्रम–भूत प्रेत में इतना विश्वास है कि यह उसे विरासत में मिलता चला आया है। बड़े–बुजुर्गों की कहानियाँ

और भूत–प्रेत की मान्यताएँ भी उसे कमजोर बना देती है। उसके बीच हालात की मार उसे और भी कमजोर बना देती है। जिससे वह न चाहते हुए भूत–प्रेत में विश्वास करने लगता है। प्राचीन मान्यताओं और भूत–प्रेत की कथाओं के सूनने का और उससे क्या प्रभाव पड़ता है। उसका अंकन हम रवीन्द्र कालिया जी के उपन्यास खुदा सही सलागत में देख सकते हैं। उपन्यासकार ने उपन्यास का प्रारम्भ ही कुछ इस अंदाज में किया है कि वही से उसके मध्यवर्गीय समाज की मानसिकता का यथार्थ चित्रण उसको प्राप्त हो जाता है। जिसका उदाहरण हम निम्न पंक्तियों से देख सकते है। ''गली के बीचों–बीच एक बड़ा सा अहाता था। अहाते के बीचों–बीच एक पुराना नीम का पेड़। लगता है पेड़ के नीचे कभी एक कुआँ रहा होगा। जिसे भरकर चौतरा सा बना दिया गया था।''[5]

इस कुएँ और नीम के पेड़ को लेकर गाँव के बड़े–बुजुर्गों की अपनी एक अलग कहानी है। जिसका असर गली के लोगों पर क्या पड़ता है। उस कहानी और उसका प्रभाव निम्न पंक्तियों द्वारा देखा जा सकता है–

''इस नीम और कुएँ पर भूतों का डेरा है। भूतों के डर से लोग अपना रास्ता बदल लेते थे। मुहल्ले के कुवारी कन्याओं को कुएँ से पानी भरने की मुमानियत थी। रात–विरात नीम के नीचे से अकेले गुजरना तो दूर, भाई लोगों ने यहाँ तक प्रचारित कर रखा था कि जहाँ–जहाँ तक नीम का साया पड़ता हैं। कोई औरत सुखी नहीं रह सकती। भूतों को लेकर जीतनी कहानी सुनी जाती थीं। लगता था कि भूतों की दिलचस्पी केवल स्त्रियों और बच्चों में थी। शीरी ने इसी कुएँ में कूदकर अपनी जान दी थी। शीरी के फरहाद ने लम्बे समय के इन्तजार से आजीज होकर अपनी जान की बाजी लगा दी थी और सरला को दहेज का यही अन्धा कुआँ निगल गया था। अमावस की रात लोग सूरज डूबते ही अपने–अपने घरों में बन्द हो जाते, क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि अमावस की रात को कभी तो शैतान के अट्टाहास की तरह आवाजें उठती है और कभी किसी औरत के सिसकने की। किस्से यहीं खत्म नहीं होते। पार्वती ने शादी के दूसरे रोज अपने को इसी कुएँ के हवाले कर दिया था।''[6]

उपर्युक्त पंक्तियों का प्रभाव भी देखा जा सकता है। कि एक अच्छा–खासा आदमी इस प्रकार की कथा को रोज–रोज सुनकर मानसिक रूप से बीमार पड़ जाता है। और अन्ततः उसे अपनी चक्की और मकान कम दाम में ही बेचकर भागना पड़ता है। एक मध्यवर्गीय परिवार जो किसी प्रकार अपना जीवन यापन करता है। जिसे अपने परिवार की परिवरिश करने में भले ही कितनी भी कठिनाई का सामना क्यों न करें। लेकिन इस प्रकार के अन्धविश्वास में वह पड़ ही जाता है और रोजी रोटी बेचकर कहीं अन्यत्र जाकर बसने को मजबूर हो जाता है। जिसका उदाहरण खुदा सही सलामत की इन पंक्तियों से देखा जा सकता है।

''चक्की का पहला मालिक ताहिर खुदातर्स इंसान था। नीम के भूत की कहानियाँ सुन–सुनकर इतना डर गया था कि उसकी पीठ में दर्द रहने लगा। वह वह इस कदर खौफजद : हो गया कि उसने केवल अनाप–शनाप दाम में चक्की बेच दी बल्कि मन लगाकर पाँचों वक्त का नमाज़ भी पढ़ने लगा।''[7]

''यह औरत जात आदमी का पूरा सुख–चैन छीन लेती है।' शिवलाल बड़ी नफरत से अपनी पत्नी की ओर देखता। अगर कहीं गुलाबदेई का पल्लू उसके वक्ष पर से हट गया होता तो वह बात बीच में छोड़कर उसके बालों को मुट्टी में लेकर झँझोड़ते हुए बेकाबू हो जाता, हरामजादी यह नुमाइस किसके लिए लगा रखी है?

गुलाबदेईपल्लू संभालकर करवट बदल लेती।

हालात यह हो गई थी गुलाबदेई के सर से पल्लू सरका नहीं कि यह गाली बकने लगता। बात–बात पर ग्राहकों से उलझ जाता। एक दिन उसने तैश में आकर खाँ साहब का कनस्तर सड़क पर फेंक दिया। खाँ साहब ने सिर्फ इतनी शिकायत की थी कि पिछली बार गेहूँ जरा मोटा

पिसा था। खाँ साहब ताज्जुब से उसकी और देखने लगे कि क्या वही शिवलाल है जो गली में से गुजरने वाले हर उस आदमी को आदाब करता था जिससे उनकी आँखें चार होती थीं। अब वह किसी की तरफ पटलकर भी नहीं देखता था मुहल्ले के लौंडे दातौन के लिए अगर नीम पर चढ़ जाते तो शिवलाल व्यग्र हो उठता। उसे लगता लौंडे जरूर गुलाब–देई से आँख लड़ा रहे है।''[8]

स्त्रियों के ऊपर शक करना अपने और उसकी जिन्दगी में जहर घोल लेना मध्यवर्गीय समाज में घर–घर की कहानी है। कथाकार ने अपने उपन्यास में हर जगह इसका अंकन कर दिया है। चाहे वह किसी वर्ग में हो, पंड़ित से लेकर शिवलाल चाहे चन्नी ये पात्र किसी न किसी कारण बस अपनी पत्नी पर शक करने लगते है। फर्क बस शिक्षा और अशिक्षा का है कोई स्त्री–पात्र जो पढ़ी लिखी है, वह अपने पति पर केस भी कर सकती है और दूसरी जो पढ़ी लिखी नहीं है वह अपने पति के सारे जुल्मों को सहती है और उससे वह अपना भाग्य विधाता मानती है। लेकिन जब वह मजबूर हो जाती है तो इस पर केस तो नहीं करती लेकिन उससे अपना रास्ता अलग कर लेती है। कथाकार ने गाँव और शहर दोनों ही जगह की स्त्री पात्रों का अंकन अपने उपन्यास में किया है। गुलाबदेई जो एक ग्रामीण महिला है। परन्तु अपने पति के जुल्मों को सहकर भी उसके साथ जीवन–जीने को तैयार है। कुछ पल के लिए नाराज तो जरूर होती है। मगर उसका हृदय मोम की तरह अपने पति पर ही पिघलता है। दूसरी तरफ चन्नी जब नौकरी से वापस मुम्बई आता है। तब उसे अपनी पत्नी के रहन–सहन और हाव–भाव से शक पैदा होने लगता है और वह अपनी पत्नी से झगड़ा–झंझट करने लगता है। शक का भूत इतना ऊपर चढ़ गया है कि वह अपनी पत्नी को जान से मारने को उतर जाता है। शक का भूत व्यक्ति को पागल बना देता है। वह यह भी नहीं सोचता कि उसका परिणाम क्या होगा। जिसका उदाहरण हम निम्न पंक्तियों से देख सकते है।

''मैं आज उसे जान से मार देता, उसने बन्दूक का रूख बदल दिया। वह देखो छत पर गोली का निशान है।''

''कैप्टन तुम पागल हो गये हो। अगर उसे गोली लग जाती तो क्या होगा?''

''सूली पर चढ़ जाऊँगा, मगर उसे यों मनमानी न करने दूँगा'' छह महीने बाद शिप से लौटा हूँ। घर लौटकर पता चला कि मेरी पत्नी पेट से है, दो महीने के पेट से। आप बराय मेहरबानी इस मामले को तूल न दें।''[9]

एक मध्यवर्गीय परिवार की अनेकों समस्याएँ होती है ये अपने मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहती उसके किए अनेक यातनाओं का शिकार भी होना इनके लिए कोई बड़ी बात नहीं होती। इनका हर तरह से मानसिक स्थिति का शिकार होना स्वभाविक है। चाहे वह राजनीति हो या बेटी की शादी संघर्ष तो जारी है। ऐसा प्रतीत होता है। कि सारी दुनियाँ का शिकार मध्यवर्गीय परिवार ही है। बेटी की शादी को लेकर एक मध्यवर्गीय परिवार का संघर्ष रवीन्द्र कालिया जी के उपन्यास में देखा जा सकता है। अजीजन बाई और शील दोनों ऐसी महिलाएँ हैं। जो अपनी बेटी की शादी को लेकर अनेकों सपना देखती है और उसे पूरा करने के लिए अथक प्रयास भी करती हैं मगर उनका सपना अन्ततः पूरा नहीं हो पाता मानो प्रकृति ने अपना दरवाजा उनके लिए बन्द कर रखा हो। अजीजन की हार्दिक इच्छा होती है कि वह अपनी बेटी की शादी अपने घर से करेंगी बारात उनके दरवाजे पर आयेगी मगर लड़का उनकी जाति का नहीं होता है और उन्हें इस बात का डर सदैव बना रहता है कि समाज गली के लोग इस शादी के लिए तैयार होगें की नहीं। इस गली में बारात आये पता न कितने दिन हो गये लेकिन किसी भी लड़की की बारात नहीं आयी जिसका मुख्य कारण दो रूपों में देखा जा सकता है। पहला गरीबी है। दूसरा उससे भी बड़ा कारण यह हो सकता है कि वह गली वेश्याओं की यह मुख्य कारण है। जिसके वजह से कोई भी लड़का इस गली की लड़कियों से शादी करने को

कभी भी तैयार नहीं होता यदि कोई लड़का तैयार भी हो जाता तो उसका परिवार शादी के लिए तैयार नहीं होता। तब उस लड़के के सामने भागना ही एक विकल्प बनता है। लेकिन अजीजन बी इस तरह के रिश्ते को तबज्जों नहीं देती। उनका यह मानना है कि हर हाल में अपनी बेटी की शादी इसी गली से करुगी। एक माँ और उसके सपनों का अंकन निम्न पंक्तियों द्वारा देखा जा सकता है।

''बारात–वरात में क्या रखा है, प्रोफेसर ने कहा, मैं तो बहुत ही साधारण तरीके से शादी करना चाहता हूँ।''

'मगर में जब भी गुल की शादी करुँगी, बहुत धूमधाम से करुँगी दोनों ही रीतियों से करूगी। मेरी अम्मा बताया करती थीं कि हम लोग बुनियादी पर हिन्दू ही थे और बादशाही जमाने में ही हिन्दू से मुसलमान हुए थे।'

प्रोफेसर बारात आदि के झंझट से निरुत्साहित हो रहा था। उसे आशा नहीं थी कि उसके माता–पिता या कोई भी रिश्तेदार इस शादी में शामिल होंगे। वह बहुत सादगी से बोला, मगर मैं कचहरी में शादी करने के पक्ष में हूँ। आपकी इच्छा है तो बारात भी लेकर जाऊँगा, उसमें मेरे रिश्तेदार न होंगे, माता–पिता के आने का तो प्रश्न ही नहीं।'

'आप एक पढ़े–लिखे आदमी हैं। यह सब आप खुद तय कर सकते हैं। शादी हर रस्म इसी मुहल्ले में होगी।' जरूर होगी।'[10]

मध्यवर्गीय समाज में प्रायः देखने को मिलता है कि शादी अगर लव मैरिज होता है तो उसके टूटने का खतरा हमेशा बना रहता हैं। कथाकार रवीन्द्र कालिया ने अपने उपन्यासों में इसका चित्रण किया है, और लव मैरिज पर घर वाले तैयार नहीं होते जल्दी पर वे मान भी जाते है। तो उन्हें रिश्ता टूटने का डर हमेशा सताता है, और पत्नी और पति में वह पहले वाला प्यार भी नहीं रहता आगे चल कर अक्सर उनके बीच किसी न किसी बात को लेकर कलह उत्पन्न हो जाता है। जो निम्न पंक्तियों के माध्यम से देखा जा सकता है–

''रोज, रोज की कलह से कहीं बेहतर है अलग हो जाना। शील ने अत्यन्त संयम स्वर में जवाब दिया था। उसने कलेजे पर पत्थर रख कर यह कहीं थी। रिसीवर रखते ही उसकी आँखों से टप–टप आँसू गिरने लगे। उसे लगा उसकी बहन ठीक ही तो कह रही थी कि बच्चों की बर्बादी हो जाएगी। दोनों नाती उसकी गोद में ही पले थे। आज भी फोन आता है तो कहते हैं, पहले नानी से बात करेगें।''[11]

ए.बी.सी.डी. उपन्यास में शीनी और निक का प्रेम विवाह हुआ था और उसने अपने मर्जी से यह शादी किया था और वह अपने इस रिश्ते को सम्भाल तक नहीं पाई और रोज–रोज के कलह एक तरफ रिश्ते को तोड़ने तक आ गई और वही दूसरी तरफ उनके बच्चों का भविष्य खतरे में दिखाई पड़ रहा था। यह उनके जिम्मेदारी है, पर वह अपने रोज–रोज के झगड़ा और झंझट से मुक्त होना चाहते है। निम्न पंक्तियों से देखा जा सकता हैं–

''यही बात मुझे भी खाये जा रही है कि कौन करेगा बच्चों की देखभाल। बच्चे शीनी के पास रहेंगे तो उन्हें खाली पेट ही स्कूल जाना पड़ेगा। निक के पास रहेंगे तो होमवर्क कौन करायेगा। मुझे तो यह सोच–सोच कर रोना आता रहता है जी शील ने कहा और सचमुच आँखें पोंछने लगी।''[12]

मध्यवर्गीय समाज की अनेक समस्यायें और विडम्बना है जो कि उपन्यासकार ने दिखाया है और जो कभी साथ रहने के लिए हर हद को पार करते है। वही अचानक इतने बदल जाते है...। कि एक दूसरे का चेहरा भी देखना पसन्द नहीं करते एक तरफ निक और शीनी को दूसरी तरफ चन्नी और उसकी पत्नी को देखा जा सकता है। कि किस तरह एक दूसरे से इतनी नफरत करने लगते है, वही प्रोफेसर और गुल है। जो कि एक दूसरे से प्रेम विवाह करना चाहते है, मगर वे ये नहीं जानते कि भविष्य में कितनी मुश्किल का सामना

करना पड़ सकता है। वे इससे अनजान है, और एक दूसरे से किसी भी कीमत पर ब्याह करना चाहते है।

हमारे मध्यवर्गीय समाज में जहाँ तवायफ को बुरी नजर से देखा जा रहा है। यह समाज नेताओं के सफेद पोशाक के अन्दर वाले पोश धारण है। वैश्याओं के दहलीज पे कौन जाता था यही मध्यवर्गीय के लोग (कुछ उनमें से उच्चवर्ग के लोग भी थे) और वहीं समाज में उनको हेय दृष्टि से देखते थे समाज के सबसे बड़े दुश्मन कौन था यही समाज के ठेकेदार एक कहावत याद आ गया जो इनमें सटीक बैठता हैं– गुड खा गुलगुला से परहेज करा' या यो कहें कि समाज में रवीन्द्र कालिया ने अपने उपन्यास खुदा सही सलामत में दिखाया है। उनको समाज में नंगा किया है, जो कि कभी तवायफों के घर पर पी के पड़े रहते थे और समय आते ही वे लोग पहले इससे मुँह मोड़ते है। जैसे वे दूध के धूले है वे लोग तवायफो के गली से ऐसे मुँह मोड़ते है, कि उनको कोई देख लेगा तो वह अपनी कुर्सी के जाने का खतरा है, ऐसे ही है श्याम जो आज बड़े मंत्री बन गये है और वह अजीजन बी. से मिलने उसके घर जाते है, और दिवार पर पड़ी अपनी फोटो को उतार लेते है। जैसे कोई देख लेगा तो उनकी अपनी बेइज्जती समझ आयेगी और वे इस गली से इस तरह भागते है जैसे कि मानो आँधी या तूफान आ गया हो उसका उदाहरण हम इस पंक्तियों से देख सकते है।

''नेताजी इतने तैश में थे कि जाते–जाते दहलीज से टकरा कर पड़े। उनका होंठ कट गया। खून बहने लगा मगर वह होंठो पर रूमाल रखे तेजी से गली के बाहर निकल गए।''[13]

अक्सर हम मध्यवर्ग में देखते है कि जो लोग नौकरी पेशा में होते है, वे अपने नौकरी से खुश नहीं दिखाई देते है। वे और आगे बढ़ने के चक्कर में जो कमाये रहते है, वे भी डूबने के कगार पर आ जाते है। ऐसे एक पात्र है शिवेन्द्र बाबू जो आयकर विभाग में आयकर अधिकारी के पद पर तैनात है। उनका तबादला मुम्बई हो जाता है और उनको मुम्बई के फिल्मी दुनिया का हवा इस तरह लगता है कि वे एक फिल्म बनाने के बारे में सोचने लगते है यह जिन्दगी कितनी हसीन है। एक कहावत है कि ''पैसा जिस रफ्तार से आता है। उसी रफ्तार से निकल जाता है या यो कहें कि उनकी जो दो नम्बर की कमाई है। जैसा का धन तैसा में चले जाना वाली कहावत सिद्ध होता है। शिवेन्द्र बाबू को पहले तो सोचा था कि वे फिल्मी दुनिया में नहीं जायेगे मगर ज्यादा के चक्कर में पड़ जाते है। उन्होंने फिल्म के चक्कर में ज्यादा से ज्यादा लोगों को पैसा देकर अपने पक्ष में मिला लिया था और वे लोग समय पर काम नहीं आते है। शिवेन्द्र बाबू तो बुरी तरह पिट जाते है। जो हम इस पंक्तियों में देख सकते है–

''फिल्म दो दिन से पिट गयी। बम्बई के एक दर्जन थियेटरों में फिल्म रिलीज हुई थी, सभी जगह सन्नाटा बिछा था। तमाम पत्रकारों ने भी पैतरा बदला और फिल्म की जमकर धुनाई की। शिवेन्द्र को लगा, उसकी स्कॉच के साथ धोखा हो गया। उसने बहुत कीमती उपहार पत्रकारों को दिए थे मगर किसी ने नमक अदा न किया। पहली ही झोंक में उसकी तीनों गाड़ियाँ और चार घोड़े बिक गये।''[14]

यह शिवेन्द्र बाबू ने कभी सोचा ही नहीं था कि उनकी यह दशा हो जायेगी वे बेचारे ज्यादा के चक्कर में इस तरह फंसे कि उनके सभी सगें सम्बन्धी ने उनका साथ छोड़ने लगे जिन पे वे पैसे खर्च किया करते थे। इसी लिए कहा गया है, कि आदमी महान नहीं होता समय महान होता है। जो कि आदमी को अर्स से फर्स पर ला देता है। शिवेन्द्र बाबू बेचारे इस तरह पिट गये कि उनके पास कौड़ी भर के मोहताज़ हो गये है। अगर शिवेन्द्र बाबू ने फिल्मी दुनिया में पैर न रखा होता तो उनका यह हाल न हुआ होता।

रवीन्द्र कालिया ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज का यथार्थ चित्र अंकन किया है। चाहे वे छोटे लोग हो यहाँ बड़े लोग सबका यथार्थ अंकन किया है। हमारे समाज में बहुत से विसंगतिया है, जिसे हमे दूर करना चाहिए समाज

या धर्म के ठेकेदार को यह रास नहीं आता समाज में अनेकों प्रकार से भ्रष्टाचार अराजकता फैला हुआ है। छोटे हो या बड़े उसमें कहीं न कहीं लिप्त है। हर कोई अपने स्वार्थ के तावा पर अपनी रोटी सेकने के लिए तैयार है। इसी लिए इस समाज का भला कहाँ से हो जाएगा।

lUnHk xzUFk lwph&

1. ए.बी.सी. डी. उपन्यास, रवीन्द्र कालिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2004, पृ.–35
2. वही, पृ. सं.35
3. 17 रानडे रोड पृ. सं. 100
4. रानडे रोड, पृ. सं. 101
5. खुदा सही सलामत है, पृ. सं. 72
6. खुदा सही सलामत है, पृ. सं. –12
7. खुदा सही सलामत है, पृ. सं. 17
8. खुदा सही सलमात है, पृ. सं. 19
9. 17 रानडे रोड उपन्यास, पृ. सं. 91
10. खुदा सही सलामत है, उपन्यास,पृ. सं. 257
11. ए.बी.सी.डी. उपन्यास पृ. सं. 86
12. ए.बी.सी. डी पृ. सं. 92
13. खुदा सही सलामत है, पृ. सं. 60
14. 17 रानडे रोड उपन्यास, पृ. सं. 68